हनुमान चालीसा हिंदी में:

॥ दोहा ॥

श्रीगुरु चरन सरोज रज, निज मनु मुकुरु सुधारि।

बरनौं रघुबर बिमल जसु, जा को पहिचानै होइ ॥

॥ चौपाई ॥

बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौ पवन-कुमार।

बल-बुद्धि-विद्या-देहु मोहिं, हरहु कलेस विकार ॥१॥

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर, जय कपीस तिहुँ लोक उजागर।

रामदूत अतुलित बल धामा, अंजनी-पुत्र पवनसुत नामा ॥२॥

महावीर विक्रम बजरंगी, कुमति निवार सुमति के संगी।

कंचन बरन बिराज सुबेसा, कानन कुंडल कुंचित केसा ॥३॥

हाथ बज्र औ धवला विराजै, कांधे मूंज जनेउ साजै।

संकर सुवन केसरी नंदन, तेज प्रताप महा जग वंदन ॥४॥

(हनुमान चालीसा का मध्य भाग)

दूरिग्रम रघुवर बामकी, सकल लोक हित प्रभु कामकी।

प्रिय प्रदरशन सुमिरन गामी, बल बुद्धि विद्या देन के स्वामी ॥३६॥

अष्टसिद्धि नौ निधि के दाता, अस बर दीन जानकी माता।

राम रसायन तुम्हरे पासा, सदा रहौ रघुपति के दासा ॥३७॥

सुनहु सुजसु प्रभु कृपा करी, तुलसीदास सदा हित चरी।

राम लखन सीता मन बासी, हृदय करुना घट घट जो आसी ॥३८॥

सबही सुमन सब पिया बैसंती, कहत मालत मुनि नरहरि गावै।

बिनय पंचरात्र हनुमत मंगल, जय शङ्कर हरहि भव भङ्ग दल ॥३९॥

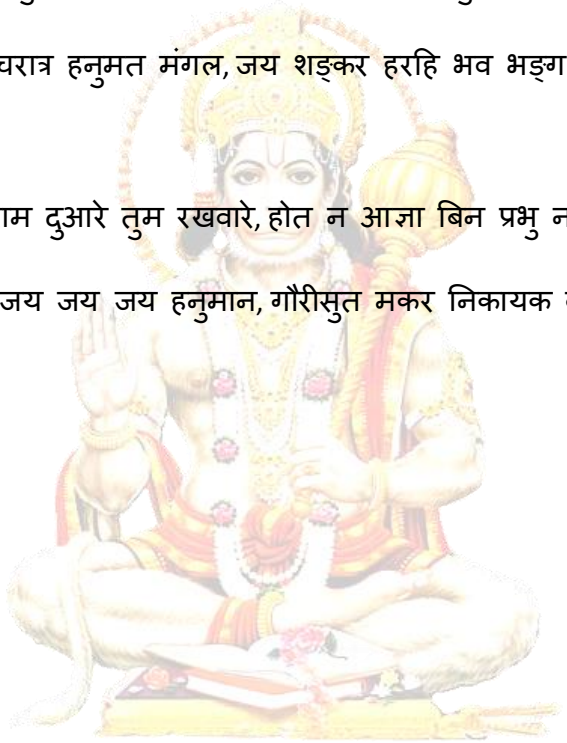

राम दुआरे तुम रखवारे, होत न आज्ञा बिन प्रभु नारे।

सह-अमित जय जय जय हनुमान, गौरीसुत मकर निकायक वाना ॥४०॥ ॥